International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED), ISSN: 2320-8708
Vol. 2, Issue 1, Jan.-Feb., 2014, pp: (1-3), Impact Factor: 1.125, Available online at: www.erpublications.com

खजुराहों के क्षेत्र में फैली कला – शिल्प कला तथा शैल–चित्रों के संदर्भ में

शिव प्रताप सिंह बुन्देला
M.Phil. -Fine Art, Mewar University, Chittorgarh, India

शिल्प कला

भारत के मध्यप्रदेश में छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो मूर्तियों और मंदिरों के कारण विश्व प्रसिद्ध है। खजुराहो आज भी अपने कला सौन्दर्य तथा नागर शैली के विशाल मंदिरों एवं मूतियों के कारण विश्व प्रसिद्ध है।

खजुराहो में नवीं सदी से बारहवीं सदी के मध्य के चंदेल मंदिर शिव, वैष्णव एवं जैन सम्प्रदायों से सम्बन्धित है। मंदिरों एवमं मूतियों के निर्माण की पुष्टि से लगभग 950 ई0 से 1050 ई. के मध्य का काल सर्वाधिक महत्वपूर्ण रहा है।

इसी अवधि में यहॉ के श्रेष्ठतम मंदिर कंदरिया महादेव मंदिर, लक्ष्मण मंदिर, घंटाई मंदिर एवंम पार्श्वनाथ मंदिरों का निर्माण हुआ। स्थानीय लोगों के अनुसार खजुराहों में कुल 85 मंदिर थे किन्तु वर्तमान में उनमें से केवल 25 मंदिर ही दर्शनीय बचे है।

खजुराहों के मन्दिरों को चार प्रकार में बाटा गया है।

1– पश्चमी समूह – इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण दर्शनीय और सुरक्षित मंदिर है। इनमें चौसठ योगनी, कंदरिया महादेव, जगदम्बा, चित्रगुप्त, सूर्य मंदिर, चोपरा ताल, विश्वनाथ, नंदी, पार्वती, लक्ष्मण मंदिर, वराह मंदिर, मतंगेश्वर और संग्राहलय है।

2– पूर्व समूह – यह जैन मन्दिरों का क्षेत्र आता है। जिसमें पार्श्वनाथ, आदिनाथ, शांति नाथ, घंटाई, बावन मंदिर तथा जैन संग्रहालय है।

3– उत्तरी समूह – इसके अंतर्गत जवारी, ब्राह्मा और ललगुवॉ के मंदिर है।

4– दक्षिणी समूह – दक्षिणी समूह में दूल्हादेव और चतुर्भुज मंदिर गिने जाते है।

खजुराहो के मूर्ति शिल्पों में मेरी रूचि बचपन से ही रही है क्योंकि मेरा गॉव खजुराहो के निकट है। इसलिए मेरा खजुराहो में आना जाना बचपन से ही रहा है। इसी कारण मेरा झुकाव कला के प्रति बचपन से ही रहा है। शुरूआत में मैने महाराजा महाविद्यालय में बी.ए. चित्रकला में प्रवेश लिया इसके बाद मैने माधव महाविद्यालय ग्वालियर से चित्रकला से एम.ए. किया इसके बाद मैंने मेवाड़ विश्वविद्यालय में एम.फिल. चित्रकला में प्रवेश लिया, एम्.फिल में मैंने ''खजुराहो का मूर्ति शिल्प एक विषयात्मक विवेचन'' विषय लेकर लघु शोध प्रबन्ध के अन्तर्गत कार्य किया। मैंने अपने लघु शोध के प्रथम अध्याय की प्रस्तावना में खजुराहो के मंदिरों के उपर अपने विचार प्रकट किये। प्राचीन समय में चंदेलों ने अपने समय में इन मंदिरों, देवालयों को बनाने का उनका क्या उद्देश्य रहा होगा। यह जानने के लिए मैने स्वंय खजुराहो जाकर एवं स्वंय के विवेक गाईड एवं स्थानीय लोगों की मदद से खजुराहों का इतिहास, मंदिरों का इतिहास एवंम मंदिरों में उत्कीर्ण मुर्तियों का गहन अध्ययन करके अपने लघु शोध को पूर्ण किया है। मैंने स्वंय अपने अनुभव से फोटो ग्राफी करके लगभग सभी विषय लिये मूर्तियों की फोटो खींचकर अपने शोध कार्य में नियम व विषयबद्ध रूप से चित्र सूची सलंग्न की है।

मंदिर के चारों और बनी हुई असंख्य मुर्तिया **(चित्रगुप्त मंदिर)**

मंदिर पर निर्मित देवी की मूर्ति (**कन्दरिया महादेव मंदिर**)

शैल चित्र

जितना पुराना इतिहास मानव जीवन का है उतना ही पुराना इतिहास चित्रकला का भी माना गया है। जिसके प्रमाण आज भी देखे जा सकते हैं। जब मनुष्य गुफाओं में जीवन व्यतीत करता था। जंगलो में रहता था तब भी उसमें कला अभिरूचि थी जिसके प्रमाण आज भी देखें जा सकते हैं।

आदि मानव ने एक विशेष चित्रण तकनीकि को जन्म दिया यह चित्रण तकनीकि ज्यामतीय चित्रण शैली कहलाई जिसके उदाहरण विश्वभर में स्थित प्रागेतिहासिक शैलाश्रयों में देखे जा सकते हैं। स्पेन, अलास्का, फ्रांस, चीन, जापान एवं भारत के सुदूर जंगलों में स्थित शैलाश्रयों की खुरदुरी समतल दीवारों एवंम छतों में बड़ी मात्रा में उकेरे गए है। इन चित्रों को बनाने में वो लकड़ी के एक सिरे को कूट कर तूलिका बनाते थे एवंम कलर में जानवर की चरबी को मिलाते थे।

आदिमानव ने सबसे पहले लाल रंग से अपने चित्रों को बनाना प्रारम्भ किया फिर बाद में हरे एवं काले रंगों को भी प्रयोग में लाया गया। भीम वैठका, महादेव पर्वत पचमड़ी, होशंगाबाद के निकट आदम गढ़, मंदसौर, शिवपुरी एवं कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश, बिहार, उत्तर प्रदेश, छत्तीस गढ़ आदि जगह भारत में अनेकों शैलाश्रय उपलब्ध है या देखें जा सकते है।

खजुराहो (छतरपुर) मध्य प्रदेश के जंगलों में स्थित विश्व के सबसे प्राचीन शैल

भारत के मध्य प्रदेश में खजुराहो के निकट छतरपुर जिले में विजावर जनपद के निकट घने जंगलों में छुपे अम्मा पानी एवं मौना सैया नामक गुफाओं में विश्व के सबसे पुराने शैल–चित्र पाये गये है। इन चित्रों को खोजने का श्रेय महाराजा महाविद्यालय मे चित्रकला विभाग के प्रोफेसर डा. सुधीर कुमार छारी को जाता है। जिन्होंने अपनी अथक मेहनत एवं प्रयासों के पश्चात इन शैल चित्रों को ढूढं निकाला है एवं डॉ. सुधीर कुमार छारी ने इन शैल चित्रों के उपर राष्ट्रीय सेमीनार का आयोजन किया जिसका शीर्षक था ''शैल चित्र मूक अभिव्यक्ति''।

मुझे जैसे ही पता चला की छतरपुर में शैल चित्रों के उपर राष्ट्रीय सेमिनार हो रहा है तो मैंने भी सेमिनार में जाने का विचार किया । सेमिनार की तिथि 19 एवं 20 जनवरी रखी गई थी जब मैं महाराजा महाविद्यालय छतरपुर पहुॅचा तो मैंने सेमीनार में भाग लिया। यहां पर मेरी मुलाकात कई कला विद्वानों से हुई। जिसमें जयपुर विश्वविद्यालय से डा. रीता प्रताप, कमला राजा कन्या महाविद्यालय, ग्वालियर से डॉ. कुमकुम माथुर, बुन्देल खण्ड विश्वविद्यालय झांसी से प्रो0 श्वेता पाण्डेय इसके अलावा और भी कई कला विद्वानों का मार्गदर्शन मुझे मिला। जिसमें महाराजा महाविद्यालय के प्रो. सुधीर कुमार छारी प्रमुख थे।

अगले दिन 20 जनवरी को हम सभी को ''अम्मा पानी एवं मौना सैया नामक गुफाएँ जहाँ पर ये शैल चित्र बनाये गये है वहां पर गए। वहां पर जाकर मैंने देखा कि सचमुच इतने पूराने एवं इतनी ज्यादा मात्रा में बनाये गए यह शैल चित्र उस समय के मानव कला प्रेम को दिखाते है। ये चित्र पत्थरों पर बनाऐ गए हैं। एवंम इनमें लाल रंग का प्रयोग किया गया है। यहॉ पर पाए गए शैल चित्रों को अभी तक के सबसे पुराने शैल चित्र माने गए है।

इन शैल चित्रों में आदि मानव की जीवन पद्वति, शिकार, प्रोद्योगिकी, संचार विधि, उपकरण, कला भूषण, मौलिक संस्कृति आदि की झलक मिलती है। यहां पर आदिम कलाकार ने केवल प्राकृतिक गैरू रंग का प्रयोग किया है।

प्रमुख–चित्र

1– सबसे अच्छी स्थिति में स्पष्ट एक चित्र जानवर को घायल तथा आहत करते हुये चित्रित किया गया है। इसकी गर्दन के उपर के बाल तथा कान पूंछ से मालूम होता है कि यह जानवर गधा या घोड़ा है।

2– एक अन्य चित्र में केवल एक हिरण का गर्दनयुक्त सिर बड़ा सुन्दर बना है। इस चित्र में इतनी सशक्त रेखायें दिखाई देती है जो पूरी तरह भाव प्रधान है।

3– एक अन्य मानवीय चित्र में झबराले, मोटे–मोटे बालों वाले तथा मोटी–मोटी हाथों की उंगलियों को तथा सिर के बालों को एक ही मोटाई वाली रेखाओं से बनाया गया ।

4– एक अन्य चित्र में दो शिकारी एक हिरण को घेरकर शिकार करते हुये चित्रित किया गया है।

अम्मा पानी की गुफा में निर्मित शैल चित्र

मौना सैया में निर्मित शैल चित्र